राज कॉमिक्स
मूल्य 6.00 संख्या 368
कारुं का खजाना
अश्वराज
ALFA INVES
SRI GANGANAGAR-335001
इस कॉमिक्स के साथ अश्वराज का आकर्षक स्टीकर मुफ्त
comics.animehood.net

अङ्गराज की सनसनीखेज खोज
कंकाल का खजाना
लेखक: तरुणकुमार वाही
संपादक: मनीष गुप्ता
कलानिर्देशक: प्रताप मुलिक
चित्रांकन: चंदू
महर्षि फकमसाकने अंतिम आहुति यज्ञाग्नि को भेंट की–
प्रकट हो ढपोरशंख प्रकट हो।
ढपोर शंख?
अन्तिम यज्ञाहुति के पश्चात अग्नि की लपटें लपलपा उठीं–
प्रकट हो ढपोरशंख।
यज्ञाग्नि से प्रकट होने लगा ढपोरशंख–
शंख की पवित्र ध्वनि से गूंज उठा वातावरण।
राजा चिन्तित सिंह की चिन्ता में कोई अन्तर नहीं पड़ा था–
यह सब क्या है महर्षि?
यह ढपोर शंख है। राजन्!
इसी में निवास करते हैं मेरे बारह शिष्य।

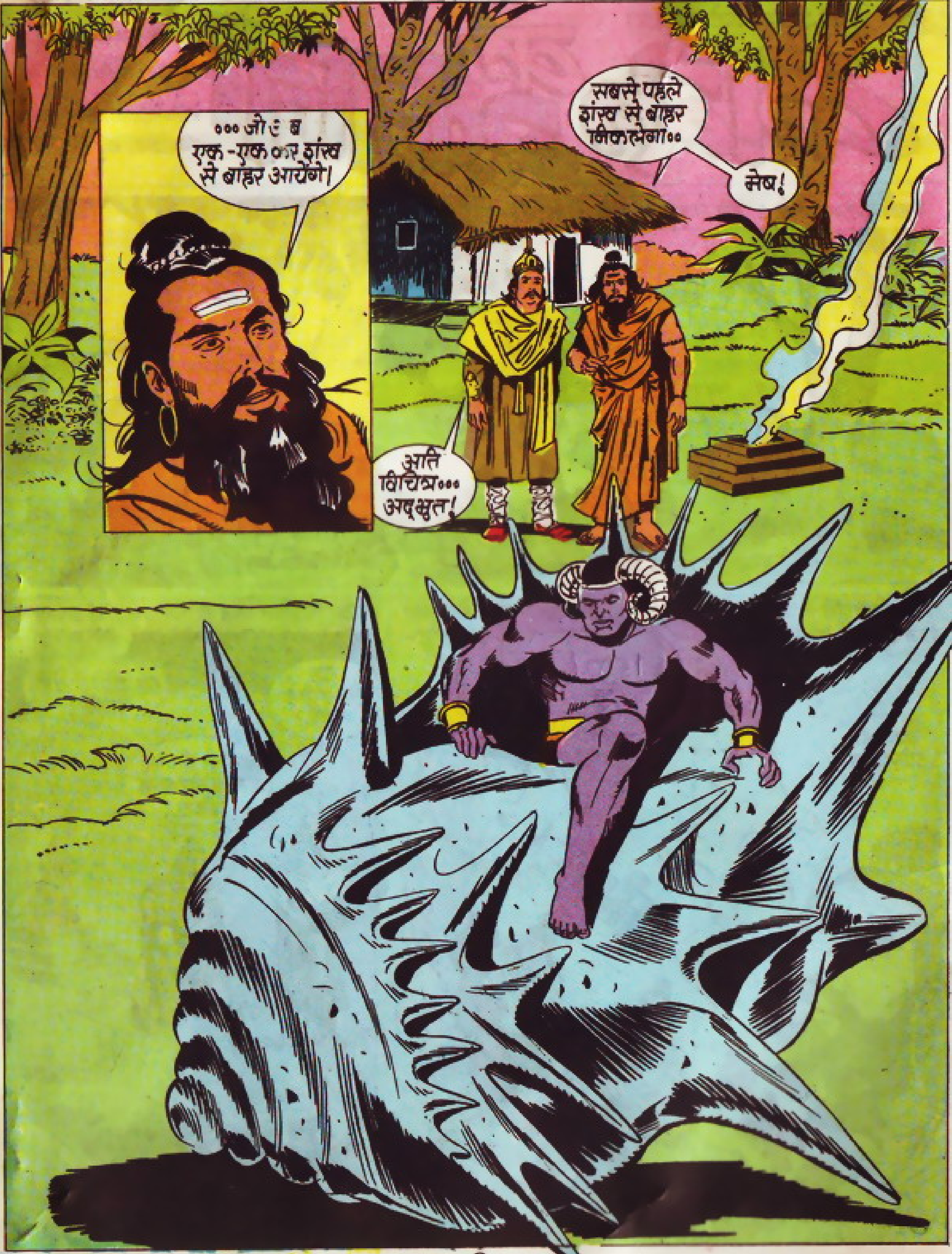
...जो १२ ब
एक-एक कर शंख से बाहर आयेंगे।
सबसे पहले शंख से बाहर निकलेगा..
मेष!
अति विचित्र... अद्भुत!

भयंकर वन की एक पुरानी भूतिया हवेली —
अरबलोक के शैतान तूताबूता को दादूबोरा का प्रणाम।
*आओ दादूबोरा! आओ।
अरबराज कारूं का खजाना लाने निकल पड़ा है तूताबूता!
घुर्र००० घुर्र०००
कमाल तो आपका है तूताबूता! आप ही ने तो ये जादुई डिबियां दी हैं मुझे००००जिनमें से विस्मयकारी प्रलयंकारी शक्तियां निकलकर किसी को भी अपने बस में कर सकती हैं।
जादुई-दर्पण में एक-एक दृश्य देख चुका हूं मैं दादूबोरा! सचमुच कमाल कर दिया तुमने।

दादूखोरा की बात सुनकर शैतान तूताखूता हंसा एक भयानक हंसी—
आहाहा हा!
अब वह दिन दूर नहीं है दादूखोरा! जब अश्वलोक के राज सिंहासन पर बैठेगा खुद तूताखूता।
और राजकुमारी घोड़ी लेखा होगी हमारी बाहों में। हा हा हा।
दादूखोरा! कारू का खजाना तुम्हारी किस्मत पलट देगा।
मुझे उस खजाने में से केवल अश्वमणि चाहिए!
बस केवल अश्वमणि!
आओ दादूखोरा! आओ! अश्वराज कारू के खजाने तक कैसे पहुंचता है, जादुई दर्पण में यही देखेंगे हम लोग!
क्यों नहीं? क्यों नहीं?

अश्वराज! 'चिन्तापोकरली' रथ-मैराथन का विजेता
विलक्षण-मानव!
अद्भुत शक्तियों के स्वामी पांच अश्वों का मालिक!
जिसमें अद्भुत इच्छाधारी शक्ति है जिससे वह कोई भी रूप प्राप्त कर सकता है।
हीईंऽऽऽ
एकाएक अश्ववट बोल उठा —
अश्वराज ठहरो। अश्वराज!
क्या बात है अश्ववट?
रक्ताम्बर कुछ कहना चाहता है।
रक्ताम्बर! ओह!
रक्ताम्बर की हिनहिनाहट केवल अश्ववट समझकर उसे बयान कर सकता था।
हीऽऽ ईंऽऽ
क्या कहना चाहता है रक्तांबर?
अश्वराज! रक्ताम्बर को पांच हजार मील आगे कारूं घाटी दिखाई पड़ रही है।
कारूं घाटी। जहां है कारूं का खजाना।

कालाखोर भी हिनहिना उठा--
हीई ऽऽऽऽ
अश्वराज! कालाखोर किसी खतरे की गन्ध सूंघ रहा है।
खतरे तो कदम-कदम पर बिछे पड़े हैं कारूं की घाटी की राह में! .....
... और अश्वराज हर खतरे की बाधा को पार करेगा! राजकुमारी कुमुमलक्ष्मी को वापस पाने के लिये मौत से भी टकराना पड़ा तो अश्वराज टकरायेगा उससे भी।
चलो!
अधिक दूर तक न जा सका था रथ कि -
ठहरो अश्वराज! कारूं के खजाने तक तुम अवश्य पहुंचना, लेकिन तब, जब तुम मुझसे छूट पाओ!

मेष तुम्हें वापस ले जाने आया है अश्वराज!
क्या सोचा?
सोचना कैसा? आगे बढ़े हुए कदम पीछे हटाना कायरता की निशानी है।
अश्वराज कुछ भी सही, पर कायर नहीं हो सकता।
ओफ्फ!
शीघ्र ही सम्भलकर पलटा मेष —
मेष की टक्कर से पहाड़ भी रेत के ढेर की तरह बह जाते हैं।

चर्रईईई...
धड़ाक
इसकी टक्कर मेरी हड्डियां हिला सकती थी!
अगले ही क्षण इच्छाधारी शक्ति के मालिक अश्वराज का रूप परिवर्तन हुआ और।
मेष, अब अश्वराज की टक्कर तुझ से कहीं ज्यादा असरदार साबित होगी।
अश्वराज बन गया था मेषरूपी।

भूतिया महल में जादुई-दर्पण एक के बाद एक दृश्य पलट रहा था—
कौन है ये मेष? कहां से आ गया अश्वराज की राह में?
महार्षि फूकमसान! का शिष्य उसे रोकने की भरपूर चेष्टा करेगा।
लेकिन रोक नहीं पायेगा उसे। महापराक्रमी है अश्वराज!
मेष रूप में दौड़ा अश्वराज—
धड़ाक
उस जबरदस्त टक्कर ने हिला दिया मेष को।
धड़ाक
मेष मूर्छित होकर लुढ़क गया और—
अश्वराज वापस मानव रूप में आ गया।
तुम्हें शीघ्र ही होश आ जायेगा मेष, लेकिन तब तक मैं बहुत आगे निकल चुका होऊंगा।

महर्षि पृकमसान बेहद चिन्तित से हो उठे—
मेष अश्वराज को रोक पाने में असफल हो गया है! राजन!
ओह!
अश्वराज को रोकना तो होगा ही।
अश्वराज को रोकने के लिये धपोरशंख से अब मेरा दूसरा शिष्य बाहर निकलेगा—वृष!
वृष बाहर आने लगा—
वह चल पड़ा अश्वराज को रोकने।
और धपोरशंख छोटा होकर महर्षि के हाथों में पहुंच गया।
महर्षि! आप बताते क्यों नहीं कारूं के खजाने का रहस्य?
अगर अश्वराज उसे प्राप्त कर लेता है तो कौन सी मुसीबत आ पड़ेगी?
सुनना चाहते हो राजन!

तो सुनो!
उस खजाने में अश्वराज की मौत छिपी है।
अश्वराज की मौत? क... कैसे?
बहुत समय पहले की बात है राजन्!
अश्वलोक में सूर्यवंशी अश्वसम्राट तारपीड़ो—
और चन्द्रवंशी अश्वसम्राट अश्वांतक...
...का राज था...
दोनों राज्य एक-दूसरे के इतने विरुद्ध थे कि—
अरे! चन्द्रवंशी!
मारो! वह हमारे राज्य की हद में प्रवेश कर गया है।
इसकी लाश
चन्द्रवंशियों की
में फेंक दी।
आह!

इसी तरह चन्द्रवंशियों के राज्य की हद में प्रवेश करना सूर्यवंशियों की भी मौत का कारण बन जाता था—
इसकी लाश उठाकर फेंक दो सूर्यवंशियों की सीमा में! हा हा हा!
एक बार सूर्यवंशी सम्राट तारपीड़ो तथा चन्द्रवंशी सम्राट अश्वांतक की सेनाओं में भयानक युद्ध भी छिड़ा...
...जो बिना किसी हार-जीत के फैसले के समाप्त भी हो गया!
इतना सब बताने के बाद महर्षि फुकमसान फिर बोले—
राजन! अब आप सोच रहे होंगे कि आखिर ये सब फसाद था किस लिये? बिना कारण तो कोई किसी का शत्रु नहीं बन जाता!
मैं आपसे यही प्रश्न करना चाहता था!
अचानक चौंक पड़े महर्षि फुकमसान—
ठहरो! ठहरो राजन! वृष अश्वराज तक जा पहुंचा है! तुम्हारी इस जिज्ञासा को मैं कुछ देर बाद शांत करूंगा!
अश्वराज रास्ता रोके खड़े वृष को देख रहा था—

अश्वराज ! कारूं के खजाने के रूप में तुम अपनी मृत्यु की ओर बढ़ रहे थे। वृष तुम्हें वहां जाने से रोकने के लिये आया है।
मेष के बाद, वृष!
वृष की शक्तिशाली टक्कर से हिल उठा रथ—
ओह!
अश्वराज का क्रोध बढ़ गया—
वृष ! अपने मकसद को मैं अपनी अन्तिम सांस तक पूरा करूंगा।
वृष से टक्कर जबरदस्त थी अश्वराज की—
अश्वराज ! जिद छोड़ दो। महर्षि कोई ना कोई राह निकाल लेंगे। राजकुमारी कुदुमछुम्बी की तलाश की।
दाढ़ूबोरा को वचन दे आया हूं मैं। कारूं का खजाना तो अब उसके सुपुर्द करना ही होगा मुझे।
तब फिर मुझे अपना बल प्रयोग करके ले जाना पड़ेगा तुम्हें महर्षि के पास।
आह!

और अद्भुत रूप परिवर्तन हुआ अश्वराज में—
अब मुझ पर क्या बल प्रयोग करोगे वृष? इस रूप के आगे खुद को निर्बल पाओगे तुम।
वृष रूपी बन गया था अश्वराज।
अश्वराज ने सींगों से उछाल फेंका वृष को—
ओह!
अश्वराज की शक्ति को ललकार कर भारी गलती की है तुमने वृष!

धाऽऽह
जाओ! अब मेरी राह में न आना!
वृष का सिर टकराया चट्टान पर और मूर्छा हावी होने लगी उस पर।
आह! अश्वराज! रुक जाओ! उफ!
और अश्वराज वह मानव रूप में आकर अपने रथ पर सवार हो चुका था–
अश्वराज अब रुकेगा कारूं का खजाना पाकर।

तूताबूता की आंखों में शैतानी चमक थी —
अश्वराज सचमुच नहीं रुकेगा। राजकुमारी कुदुमछुम्बी को वापस लाने के लिए वह आकाश-पाताल एक कर देगा।
कुछ सोचता हुआ बोला दादूबोरा —
एक बात समझ में नहीं आई तूताबूता!
अश्वलोक का राजकुमार अश्वराज पृथ्वी की राजकुमारी कुदुम-छुम्बी में ही इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहा है?
राजकुमारी सुन्दर है, किन्तु इससे भी अधिक सुन्दर राजकुमारी अश्वराज को मिल सकती है पृथ्वी पर।
••• क्या सिर्फ इसलिये कि उसने रथ-मैराथन में राजकुमारी को जीता है?
अहम् सवाल ये है कि विलक्षण अश्वमानव अश्वराज ने पृथ्वी के राजाओं व राजकुमारी की रथ-मैराथन में भाग ही क्यों लिया?
तुम नहीं समझोगे दादूबोरा, तुम नहीं समझोगे। लेकिन ये मेरा वादा रहा तुमसे कि वक्त आने पर तुम्हें एक दिन ये रहस्य मैं अवश्य बताऊंगा।

महर्षि फुकमसान देख चुके थे अपनी दिव्य दृष्टि से
वृष की असफलता भी—
अश्वराज को मैं किसी भी कीमत पर कारूं का खजाना नहीं लाने दूंगा राजन्!
मिथुन! अश्वराज को अब तुम्हें रोकना है। शंख से बाहर आओ मिथुन!
चिन्तित सिंह की चिन्ता बढ़ती ही जा रही थी—
किन्तु महर्षि! अगर मिथुन शक्ति अश्वराज को रोकने में कामयाब हो भी गयी तो दादूबोरा की कैद में फंसी मेरी बच्ची का क्या होगा?

ईश्वर पर भरोसा रखो राजन्! उसके बनाए चक्रव्यूह का रहस्य जब खुलेगा तो आंखें खुली की खुली रह जायेंगी।
लेकिन वह सब होगा समय आने पर।
अभी मैं तुम्हें बताता हूं सूर्यवंशियों और चन्द्रवंशियों में दुश्मनी की वो वजह जिसने दोनों राज्यों में भयानक तबाही मचा दी। एक तूफान खड़ा कर दिया। प्रलय मचा दी।
वह वजह क्या थी महर्षि?

वह वजह थी स्वयं सूर्यवंशी सम्राट तास्पीहो का पुत्र अश्वराज !
चाहे दुनिया इधर से उधर हो जाए अश्व-कीर्ती, किन्तु दुल्हन तुम अश्वराज की बनोगी !
अश्वराज की न बन सकी, तो मौत का कफन पहन लेगी तुम्हारी अश्वकीर्ती !
वह वजह थी चन्द्रवंशी सम्राट अश्वांतक की पुत्री राजकुमारी, अश्वकीर्ती !
हिन ऽऽऽ हींईं..
रक्ताम्बर अश्ववट से कुछ कह रहा है !

अद्भुत हैं तुम्हारे ये पांचों साथी अश्वराज!
अश्ववट! क्या कह रहा है तुमसे रक्ताम्बर?
वह चिंघोड़ा को देख रहा है।

और अश्ववट के शब्द पूरे होते ही—
तुम्हें मौत का कफन पहनाने आया हूं अश्वराज!
चिंघोड़ा?!
ये चिंघोड़ा है अश्वराज! पिताश्री का सबसे वफादार और क्रूर अंगरक्षक। उफ!
??

तुम••• तुम चले जाओ अश्वराज! इसकी शक्ति से नहीं जीत पाओगे तुम!
तुम अभी अश्वराज को ठीक से नहीं जानती हो अश्वकीर्ती!
मरने के लिये तैयार हो जाओ अश्वराज! चिंघोड़ा तुम्हारे शरीर के छोटे-छोटे टुकड़े करके सूर्यवंशी की धरती पर बिखेर देगा।
मेरे टुकड़े?
अश्वराज से अधिक फुर्तीला निकला चिंघोड़ा–
उफ़
चिंघोड़ा! छोड़ दो अश्वराज को! चन्द्रवंशी राजकुमारी अश्वकीर्ती आदेश देती है तुम्हें!

चिंघोड़ा सिर्फ और सिर्फ सम्राट अश्वांतक का आदेश मानता है लड़की! हट जा मेरे रास्ते से।
आह
ठाक
अश्वकीर्ति!
अश्वराज के मस्तिष्क में फूटने लगी क्रोध की फुलझड़ियां-
चिंघोड़ा
जान से मार डालूंगा मैं तुझे!
कड़ाक

अश्वराज परिवर्तित हो गया अश्वमानव के अकल्पनीय रूप में।
ढिशुम
??

अब रोक पाना मुश्किल था अश्वराज को—
उसके शरीर पर एक कांटा भी अश्वराज के सीने पर पड़ता है बरछी सा...
...अश्वकीर्ती के मस्तक से निकली रक्त की एक-एक बूंद....
...का बदला मैं तेरे जिस्म से रक्त की एक-एक बूंद निकाल कर लूंगा चिंघोड़ा!
इस बार अश्वराज की तलवार ले उड़ी चिंघोड़ा का सिर—
आह

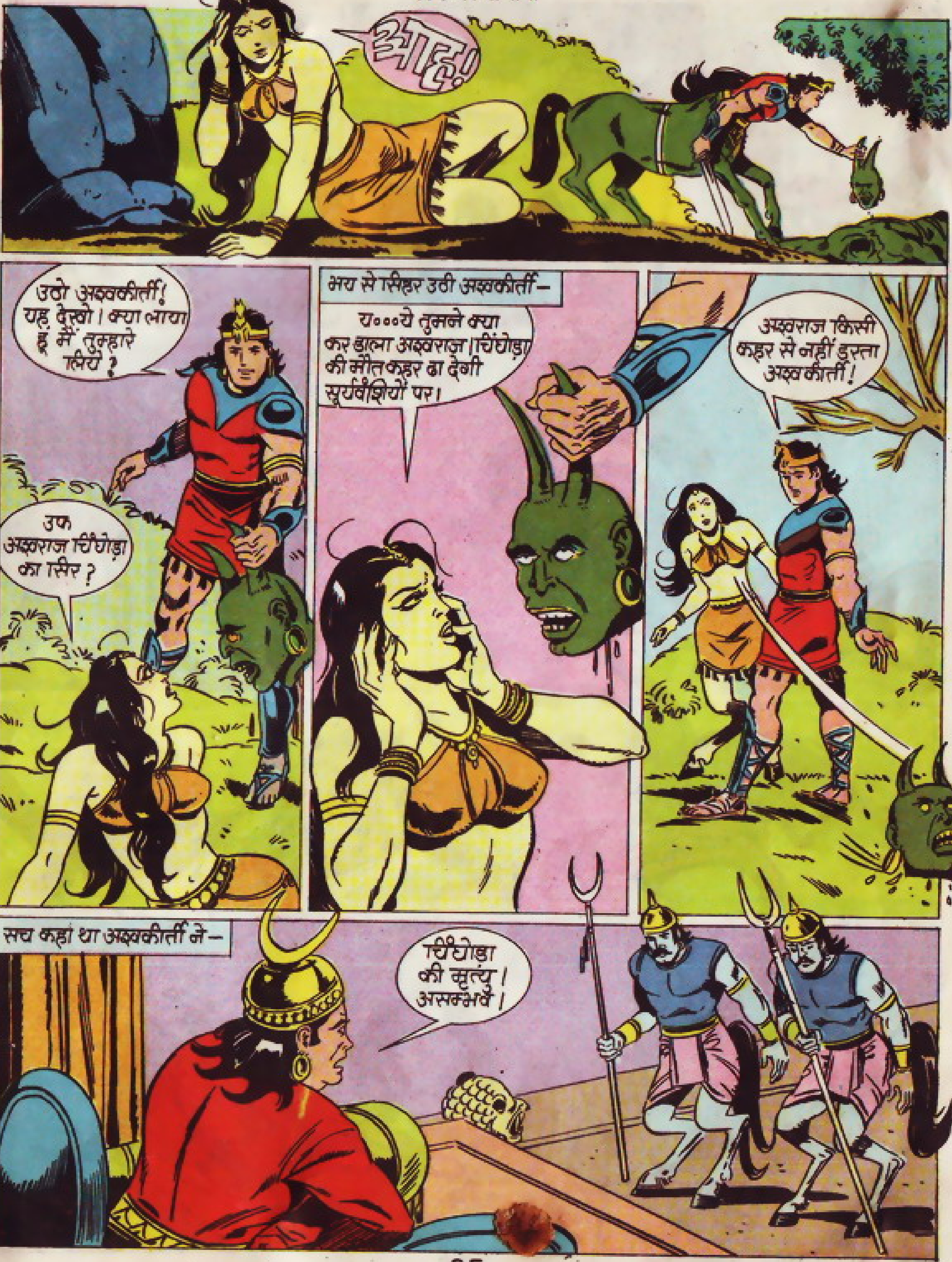
आह!
उठो अश्वकीर्ती! यह देखो! क्या लाया हूं मैं तुम्हारे लिये?
उफ अश्वराज चिंघोड़ा का सिर?
भय से सिहर उठी अश्वकीर्ती—
य...ये तुमने क्या कर डाला अश्वराज! चिंघोड़ा की मौत कहर ढा देगी सूर्यवंशियों पर।
अश्वराज किसी कहर से नहीं डरता अश्वकीर्ती!
सच कहा था अश्वकीर्ती ने—
चिंघोड़ा की मृत्यु! असम्भव!

सेनापति भुरवंडा ऽऽ!
अ००० आज्ञा करें महाराज!
शैतान तूताबूता को बुलाओ!
तूताबूता हाजिर हुआ—
तूताबूता! अश्वराज की मौत का प्रबन्ध करो!
?
उसकी मौत के लिये अश्वकीर्ती की मृत्यु आवश्यक है महाराज!
तूताबूता! क्या कह रहे हो?
राजकुमारी अश्वकीर्ती की मृत्यु!
अश्वकीर्ती को अश्वराज प्राणों सेज्यादा चाहता है महाराज! अश्वकीर्ती की मृत्यु उसकी मृत्यु का कारण बन जायेगी!

अश्वराज की मृत्यु का कारण बन जायेगी सूर्यवंशी सम्राट तारपीड़ो की मृत्यु का कारण!
महाराज! पुत्र अश्वराज का बिछोह न सह सकेंगे सम्राट तारपीड़ो!
हाँ, अश्वराज की मृत्यु के साथ ही उन्हें आपके आक्रमण का समाचार भी साथ ही मिलना चाहिए। तब बाजी होगी केवल आपके हाथ में।
अन्यथा महाराज! अश्वराज ले उड़ेगा अश्वकीर्ती को और आप कुछ न कर सकेंगे। अश्वराज के प्रेम में पागल अश्वकीर्ती आपसे भी निश्चित रूप से बगावत ही करेंगी।
हूँह
सेनापति भूखण्डा! सेना तैयार करो! और... और हमारी पुत्री अश्वकीर्ती का सिर हमारे सामने पेश करो।
महल के पिछवाड़े से कूद भागी राजकुमारी अश्वकीर्ती—
एक बाप अपनी बेटी का कटा हुआ सिर भी देख सकता है, यह आज देखा है अश्वकीर्ती ने।
उफ अश्वराज, अश्वराज! अब मैं तुम्हारे बिना एक पल भी नहीं रह सकती।

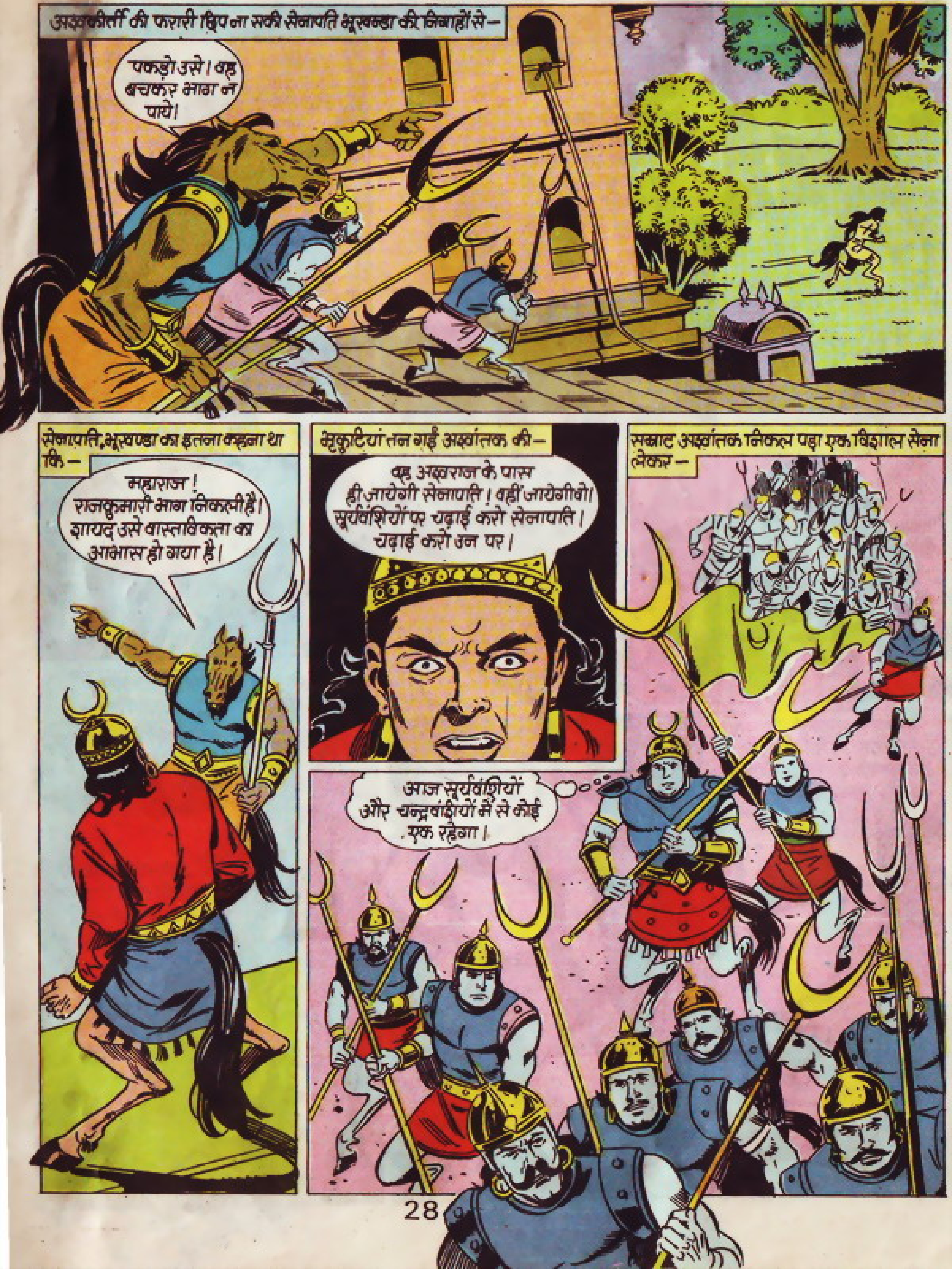
अश्वकीर्ति की फरारी छिप ना सकी सेनापति भूस्वप्ता की निगाहों से —
पकड़ो उसे। वह बचकर भाग न पाये।
सेनापति,भूस्वप्ता का इतना कहना था कि —
महाराज! राजकुमारी भाग निकली है। शायद उसे वास्तविकता का आभास हो गया है।
भृकुटियां तन गईं अश्वांतक की —
वह अश्वराज के पास ही जायेगी सेनापति! वहीं जायेगी वो। सूर्यवंशियों पर चढ़ाई करो सेनापति। चढ़ाई करो उन पर।
सम्राट अश्वांतक निकल पड़ा एक विशाल सेना लेकर —
आज सूर्यवंशियों और चन्द्रवंशियों में से कोई एक रहेगा।

अश्वकीर्ति जा पहुंची अश्वराज के पास। सबकुछ सुनकर अंगारे की तरह सुलग उठे उसके नेत्र।
मेरे जीवित रहते तुम्हें कोई छूना तो दूर तुम्हारा साया भी नहीं पा सकता अश्वकीर्ति।
आओ मेरे साथ।
कहां जा रहे हो अश्वराज? मौत के सौदागर चारों ओर से बढ़ रहे होंगे।
हिनहि...
मैं तुम्हें ऐसी जगह छिपा दूंगा अश्व-कीर्ति, जहां सिर्फ और सिर्फ मैं पहुंच सकता हूं।
तभी अश्ववट ने रक्ताम्बर और श्वेत शक्ति का संदेश अश्वराज को दिया—
अश्वराज! चन्द्रवंशियों की एक विशाल सेना सूर्यवंशी की ओर बढ़ रही है।
ओह!
रथ दौड़ पड़ा—
अश्वकीर्ति! तुम्हारी सुरक्षा भी मेरा कर्तव्य है।
तुम्हें उस स्थान से या तो मैं निकाल सकता हूं या फिर मौत।

- सूर्यवंशी सम्राट तारपीडो और चन्द्रवंशी सम्राट अश्वांतक के उस भयानक युद्ध का क्या परिणाम निकला?
- अश्वराज ने अश्वकीर्ती को ऐसे कौन से स्थान में छिपा दिया, जहां केवल या तो वह या फिर पहुंच सकती थी मौत?
- क्या अश्वराज अश्वकीर्ती को फिर उस 'स्थान' से बाहर भी निकाल पाया?
- अगर नहीं तो फिर क्या हुआ अश्वकीर्ती का? ऐसे बहुत से प्रश्न उलझाए होंगे आपके मस्तिष्क को। और उसका जवाब है, 'अश्वराज सीरीज' के इस धधकते कॉमिक का अगला भाग—

अश्वमणि